International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030, Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 279-283

पंडित जवाहरलाल नेहरू के शैक्षिक विचारों का अध्ययन एवं वर्तमान समय में प्रासंगिकता

दिशा बृजवासी

शोधार्थिनी, पीएच॰डी॰ (शिक्षा शास्त्र), श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, गजरौला, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

भारत विश्व में अपनी विशिष्ट आस्थायें, परम्परायें, विश्वास एवं मूल्य रखता है। और भारत का प्राचीन काल से ही अपना निश्चित दार्शनिक दृष्टिकोण रहा है। वास्तव में अतीत के सन्दर्भ में हमारे देश की उपलब्धियॉ प्राचीनतम हैं, और इन उपलब्धियों के कारण ही भारत में दीर्घकाल तक समस्त विश्व के राष्ट्रों की अगुवायी करने का गौरव प्राप्त किया है। हमारी सांस्कृतिक धरोहर भ्रातृत्व, समानता, स्वतन्त्रता, सहयोग, अहिंसा, आत्मविश्वास, श्रम के प्रति निष्ठा, आत्म गौरव जैसे स्थायी भाव, आदर्शो एवं मूल्यों से ओत–प्रोत, जिनकों हम निरन्तर एक पीढी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित करते आये हैं।

अंग्रेजो के आवागमन ने देश में एक नई विचारधारा को जन्म दिया। अंग्रेजों ने जहॉ परस्पर वैमनस्य का लाभ उठाकर शासकों का मानचित्र हटा दिया और स्वयं शासक बन गये, वहीं उन्होने पाश्चात्य शिक्षा का प्रादुर्भाव कर हमारे राष्ट्र को विश्व के अन्य राष्ट्रों से जोड़ने का काम किया। वह ज्ञान और विज्ञान को पाठ्यक्रमीय अनुभवों द्वारा भारतीय विद्यालयों में आवश्यक बनाकर देश को उस स्थिति तक ले आये, जिसके फलस्वरूप दासता के विरूद्ध भारतीय जनमानस में पुनर्जागरण की भावना जागृत हो गयी सन 1857 की महान क्रान्ति के उपरान्त ए0 ओ0 हयूम की अध्यक्षता में कांग्रेस वास्तव में भारत माता थी जिसकी कोख में अनेक देश भक्तों, राष्ट्रीय नेताओं जैसे–सरदार भगत सिंह, पंडित नेहरू, रामचन्द्र विस्मिल, सुभाषचन्द बोस, मौलाना आजाद, महात्मा गॉधी, सरदार पटेल, कृपलानी, व डा0 राजेन्द्र प्रसाद, आदि अनेक नेताओं ने देश को यह नेतृत्व प्रदान किया कि वह अंग्रेजों के विरूद्ध संघर्ष में जुट गया और अन्ततः 15 अगस्त, सन 1947 को संघर्षो व बलिदानों की अमर ऐतिहासिक गाथा का निर्माण करते हुए हम अपने भारत के निर्णायक और विधाता स्वयं बन गये।

भारत का स्वतन्त्र होना एक अद्वितीय घटना थी, परन्तु उससे भी अधिक महत्वपूर्ण घटना देश को एक नयी दार्शनिक, सामाजिक, राजनीतिक, विचाराधारा का मार्ग दर्शन प्राप्त होना था। जहॉ एक ओर महात्मा गॉधी, राजगोपालाचार्य, सरदार पटेल, मौलाना आजाद तथा पं0 नेहरू जैसे व्यक्तित्व थे जिनके चिन्तन और मनन पर विश्व के अन्य राष्ट्रों की दार्शनिक विचारधाराओं, तकनीकी उपलब्धियों, वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं सामाजिक संरचना का प्रभाव पड़ा, वहीं दूसरी ओर हमारे देश में विभिन्न वर्षो में अनेक सुधारवादी आन्दोलन हुए। इन आन्दोलनों का संचालन दयानन्द, विवेकानन्द, अरविन्द घोष, टैगोर व अलीबन्धु आदि मनीषियों ने किया और इस क्षेत्र में अनुपम योगदान दिया।

प्रत्येक शिक्षक की यह इच्छा होती है कि वह अपने कार्य में सफलता प्राप्त करें। कार्य में सफलता, कार्य के स्वरूप में निर्भर करती है। शिक्षक अपने कार्य में तभी सफल होता है जब वह शिक्षण के स्वरूप को अच्छी तरह से पहचाने। शिक्षण का स्वरूप शिक्षा दर्शन निश्चित करता है, इसलिए शिक्षक के लिए शिक्षा के ज्ञान की आवश्यकता है। एक अच्छा शिक्षक अपनी शिक्षण विधि में परिस्थिति के अनुसार परिवर्तन करता रहता है। कोई भी पद्धति सभी परिस्थितियों में उपयुक्त नहीं हो सकती है। यदि ऐसा होता तो विभिन्न शिक्षण विधियों का निर्माण न होता। शिक्षण विधियों में परिवर्तन लाने में दर्शन का महत्वपूर्ण योगदान है। दर्शन से यदि शिक्षक परिचित है तो वह अपनी शिक्षण विधि में अभीष्ट परिवर्तन करने में सक्षम होता है।

समय के प्रवाह के साथ–साथ शिक्षा में कुछ दोष आ जाते है। शिक्षा में जब दोष आ जाते है तो शिक्षा सुधार की बात चल पड़ती है। शिक्षा में सुधार करना समय–समय पर आवश्यक हो जाता है। शिक्षक को वर्तमान शिक्षा के गुण–दोषों से परिचित होना और शिक्षा सुधार के लिए स्वस्थ दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है। गुण–दोष का विवेचन करना और शिक्षक में स्वस्थ दृष्टिकोण का निर्माण करना शिक्षा दर्शन का कार्य है, अतः शिक्षक के लिए इसका ज्ञान आवश्यक है। सामान्यतः प्रत्येक शिक्षक किसी विषय का अध्ययन करता है और उस विशिष्ट विषय का शिक्षक कहलाने में गर्व का अनुभव करता है। यह गर्व की अपेक्षा चिन्ता का विषय है। शिक्षक को जीवन का शिक्षक होना चाहिए न कि किसी विषय का। किसी विषय का ज्ञाता यदि जीवन की समस्याओं से अपरिचित है तो वह विषय का सच्चा ज्ञाता नही कहा जा सकता, शिक्षक तो दूर की बात है। शिक्षक का शिक्षत्व इसी में है कि वह बालक के सम्पूर्ण जीवन के रहस्यों से परिचित हो और जीवन के सन्दर्भ में अपने विषय को सम्पूर्ण ज्ञान की एक शाखा के रूप में ही पढाये। तभी वह सफल शिक्षक हो सकता है, अन्यथा नही। जीवन के रहस्यों एवं अनुभव का एकता से परिचय शिक्षा दर्शन के अध्ययन से प्राप्त होता है। इसीलिए ही हरबर्ट स्पेन्सर ने कहा है कि सच्चा दार्शनिक ही सच्ची शिक्षा को व्यवहारिक बना सकता है।

शिक्षा दर्शन सामान्यतः ज्ञान के विभिन्न विषयों में विशेषतः शिक्षा की विभिन्न शाखाओं में समन्वय स्थापित करता है। यदि इस समन्वय की ओर ध्यान न दिया जाये तो शिक्षक का कार्य प्रभावहीन हो जाता है। इसीलिए रस्क ने कहा है कि जो शिक्षक दर्शन की उपेक्षा करते है, उन्हें अपने कार्य को प्रभावहीन बना डालने के रूप में इस उपेक्षा का दण्ड भुगतना पड़ता है।

ब्रूबेकर के अनुसार शिक्षा दर्शन के तीन कार्य है। प्रथम रूप में शिक्षा दर्शन चिन्तनात्मक है। इस रूप में यह सत्य का एक विहंगम दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है जिसे शिक्षा व्यवसाय में प्रयोग करने से ऐसी दिशा और विधियां प्राप्त होती है। जिनका सम्भवतः अभाव होगा। दूसरा कार्य आदर्श माना जाता है तथा तीसरा कार्य समीक्षा प्रधान है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भारत के नेताओं ने आर्थिक विकास तथा अन्य क्षेत्रों के विकास की योजनाएं बनायी। शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रयत्न किये गये, परन्तु शिक्षा नीति एकांगी एवं अनेक समस्याओं का केन्द्र बिन्दु बनी रही। परश्चात्य शिक्षा प्रणाली का उस पर

प्रभाव बना रहा और आधुनिक शिक्षा नीति भारतवासियों के लिए परम घातक सिद्ध हो रही है। बेरोजगारी की वृद्धि, भ्रष्टाचार, परीक्षाओं में नकल करने की आदत, शिक्षा एवं शिक्षक के प्रति छात्रों की उपेक्षा आचार–विचार को तिलांजलि देकर येन केन प्रकारेण सफल होने की वृत्ति आदि कुरीतियां सभी आधुनिक शिक्षा की देन हैं।

नवयुवकों के हृदय से सच्चाई, संयम, शिष्टाचार आदि का भाव समाप्त हो गया है जो नैतिकता और चरित्र संगठन भारतीय समाज का प्राण था उसकी उपेक्षा की गई है स्पष्ट रूप से कहा जाये तो आधुनिक शिक्षा मानव का सर्वागीण विकास करने में असफल सिद्ध हुई है। आज शिक्षा राजनीतिज्ञों के हाथों में खेल रही है एवं उसका कोई नैतिक मापदंड नहीं रह गया है। जिस प्रकार प्राण न रहने पर शरीर सड़ने लगता है उसी प्रकार आज शिक्षा अपना कोई बौद्धिक मूल्य न होने के कारण सड़ रही है, यदि प्रजातंत्र में शिक्षा को राजनीति के कोढ़ से बचाना है और शिक्षा का प्रयोग देश के नवयुवकों के निर्माण के लिए करना है तो हमें शिक्षा का स्वरूप शिक्षा की ही तरह रखना होगा तथा उसे स्वरूप देना होगा।

शिक्षा किसी भी समाज की आधारशिला होती है। प्रत्येक राष्ट्र की उन्नति उसकी शिक्षा व्यवस्था पर निर्भर करती है। जिस राष्ट्र में जैसी शिक्षा व्यवस्था होगी वैसे ही वह राष्ट्र तथा उसके नागरिक होंगे। सौभाग्यवश भारतीय ऋषियों, समाज सुधारकों ने समय समय पर अपने देश की शिक्षा के लिए बहुत कुछ किया, परन्तु यह निर्विवाद तथ्य है कि भारत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली अंग्रेजों द्वारा आरोपित एक विदेशी प्रणाली है। यूरोप के व्यापारिकों के साथ–साथ अनेक इसाई पादरी भी भारत आये। अपने धर्म प्रचार हेतु उन्हें शिक्षा का सहारा लेना पड़ा।" उन्होने जगह–जगह मिशन स्कूलों की स्थापना की, जिनमें भारतीय भाषाओं के द्वारा इसाई धर्म की शिक्षा दी जाती थी। मैकाले के द्वारा भारतीय शिक्षा का विदेशीकरण किया गया और सरकारी नौकरियां मात्र उन हिन्दुओं को मिलती थी जिन्होने इसाई धर्म अपना लिया हो। इनके द्वारा बडे स्तर पर भारतीयों का ईसाईकरण किया गया तथा भारतीय शिक्षा प्रणाली को उन्मूलित कर विदेशी शिक्षा प्रणाली को अपनाया गया। यही प्रणाली स्वतन्त्र भारत में अभी तक प्रचलित है। आज इस बात की आवश्यकता है कि यदि हम वास्तविक अर्थो में भारतीय नागरिक चाहते है तो प्रचलित शिक्षा प्रणाली का संरक्षण करके उनका उन्मूलन करना होगा। तथा उसके स्थान पर एक ऐसी शिक्षा प्रणाली को विकसित करना होगा जिसका आधार भारतीय संस्कृति हो।

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री ने महान चिन्तक पं॰ जवाहरलाल नेहरू के शिक्षा सम्बन्धी विचारों का अध्ययन करने का प्रयास किया है जिससे वर्तमान शिक्षा प्रणाली में इस प्रकार के परिवर्तन किया जा सके कि वह देश में समाजसेवी, विनयशील संयमी व दृढ निश्चयी नागरिकों का निमार्ण कर सके।

नेहरू एक ऐसे विवेकशील, गतिशील, चिन्तनशील, तर्कशील व गहन सामाजिक संरचना में पर्दापण करने वाले दार्शनिक और भारतीय विचारधाराओं से प्रभावित व्यक्ति थे। इन अनेक विचाराधाओं से प्राप्त अनुभवों ने नेहरू को एक विलक्षणता प्रदान की, जो कि उनके जीवन के सभी पक्षों जैसे सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक व शैक्षिक आदि में प्रस्फुटित होती है। उनकी विचारधारा क्या है? यह समझना आज की भारतीय परिस्थितियों में अत्यन्त आवश्यक है। हमारा यह विश्वास इस तथ्य पर आधारित है कि स्वतन्त्रता से पूर्व तथा स्वतन्त्रता के पश्चात नेहरू के व्यक्तित्व ओर कृतित्व ने उनकी मृत्य के क्षण तक देश को प्रभावित किया। शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को अच्छा प्राध्यापक चिकित्सक तथा कुशल श्रमिक बनाने से पूर्व एक अच्छा व्यक्ति बनाने में पं॰ जवाहर लाल नेहरू जैसे महान विचारकों के विचार निश्चित रूप से उपयोगी सिद्ध होंगे। ऐसा मेरा पूर्ण (दृढ़) विश्वास है। उत्तम शिक्षा द्वारा ही राष्ट्र की उन्नति सम्भव है। यदि हमारे देश में उचित शिक्षा व्यवस्था होगी तो भावी राष्ट्र का चरित्र भी उज्ज्वल होगा।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

1. **अब्बासी (1980):** अब्बासी, ए॰एन॰एम॰एस॰ के शोध प्रबन्ध ''द एजुकेशनल थॉट्स ऑफ जवाहर लाल नेहरू'' का निष्कर्ष इस प्रकार रहा कि बालक के जीवन के विकास में सामाजिक दृष्टिकोण अति महत्वपूर्ण है। शिक्षा मनुष्य में सूझ–बूझ उत्पन्न करने वाली हो, आत्म नियन्त्रण सिखाती हो, आर्थिक तथा कृषि विषयों का ज्ञान कराती है।
2. **बाजपेयी, जयकरण नाथ (1982):** "एजुकेशनल फिलॉसफी ऑफ जवाहर लाल नेहरू" में अनुसंधानकर्त्ता ने जवाहर लाल नेहरू के शैक्षिक दर्शन की पृष्ठभूमि में शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यवस्तु, शिक्षण–विधि, अनुशासन, स्त्री शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, अध्यापक का स्थान, राज्य का शिक्षा के क्षेत्र में उत्तरदायित्व आदि की विस्तृत चर्चा की है। अध्ययन में नेहरू के शिक्षा सम्बन्धी विचारों की पूर्वाग्रह मुक्त तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समीक्षा की गई है। जवाहर लाल नेहरू ने दर्शन एवं शिक्षा की पारस्परिक निर्भरता को स्वीकार किया। उनके अनुसार दर्शन शिक्षा को अनेक आधार प्रदान करती है। आचार्य नरेन्द्र देव के समान नेहरू ने शिक्षा के शास्वत व अपरिवर्तनीय उद्देश्यों का निर्धारण कुछ मान्य दार्शनकि सिद्धान्तों के साथ–साथ व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र की आवश्यकताओं, आकांक्षाओं, मूल्यों पर आधारित होना चाहिये।
3. **बाखे (1983):** बाखे एम0एस0 के शोध प्रबन्ध ''लोक मान्य तिलक और स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन'' में लोकमान्य तिलक और स्वामी विवेकानन्द के कार्यो और गतिविधियों के आधार पर राष्ट्रीय सन्दर्भ में उनके शैक्षिक विचारों का अध्ययन किया गया है। तिलक और स्वामी विवेकानन्द के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य को अपने आप को पहचानने में समर्थ बनाना है। बालक अपने आप में एक वास्तविकता है। शिक्षा का कार्य व्यक्ति में वह सब योग्यतायें विकसित करता है और जीवन का गहन अर्थ निकलता है। शिक्षा पूर्ण वृद्धि के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण अवसर है।
4. **खोसला (1983):** खोसला डी0एम0 के शोध प्रबन्ध ''सिक्ख गुरूओं का शिक्षा दर्शन'' का मुख्य उद्देश्य सिक्ख गुरूओं के उद्देश्यों में शिक्षा के मूल्य, उद्देश्य, शिक्षण विधि और गुरू शिष्य सम्बन्ध आदि के विषय में अध्ययन करना था। इस अध्ययन में बताया गया है कि गुरूओं के लिये सत्य ही मात्र एक मानदण्ड है और सत्यपूर्ण जीवन ही श्रेष्ठ है। यह संसार एक पवित्र स्थान है और मनुष्य को अपने व्यवहार व चरित्र का केन्द्र बिन्दु सत्य को बनाकर इनकी पवित्रता में वृद्धि करनी चाहिये। शिक्षा के द्वारा मनुष्य को एक आध्यात्मिक पूर्णता प्राप्त करनी चाहिये। और उस परम शक्ति को समझना चाहिये जो ईश्वर है।
5. **धर, पी॰ (1990):** ने अपने शोध प्रबन्ध "रवीन्द्रनाथ टैगोर एवं महर्षि अरविन्द के शिक्षा दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन" में गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर एवं महर्षि अरविन्द के शिक्षा दर्शन के विभिन्न पक्षों– शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि, अनुशासन एवं स्वतंत्रता, छात्र–शिक्षक सम्बन्ध आदि का तुलनात्मक अध्ययन करना था। इस शोध कार्य का निष्कर्ष यह है कि इन दोनों शिक्षाविदों के विचारों, विशेषतः मातृभाषा

द्वारा शिक्षा, अन्तर्राष्ट्रीय भ्रातृत्व, मनोवैज्ञानिक शिक्षक विधियों और बालक के बहुँमुखी विकास का आज की परिस्थितियों में विशेष महत्व है।

6. **एच.शंकर (1991):** ने अपने शोध प्रबन्ध "महर्षि अरविन्द एवं रूसों के दार्शनिक एवं शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन" में महर्षि अरविन्द एवं रूसों के दार्शनिक एवं शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन किया। यह शोध प्रबन्ध इन शिक्षाविदों से सम्बन्धित साहित्य के विश्लेषण पर आधारित है। महर्षि अरविन्द के अनुसार बालक की प्रच्छन्न शक्ति के बाहर निकालना ही शिक्षा है। "स्व" सार्वभौम तथा राष्ट्र में एकता स्थापित करना शिक्षा का कार्य है। इनकी शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को सम्पूर्णता प्रदान करना तथा दैवीय प्राणी तैयार करना है।
7. **रस्तोगी, श्रीमती विनीता (2000):** "पं॰ जवाहर लाल नेहरू के शैक्षिक विचारों का वर्तमान भारतीय परिप्रेक्ष्य में औचित्य" में अध्ययन के उद्देश्य– 1. पं॰ जवाहर लाल नेहरू के शैक्षिक विचार, जीवन दर्शन एवं शिक्षा दर्शन का अध्ययन करना। 2. पं॰ जवाहर लाल नेहरू के शिक्षा सम्बन्धी विचारों जैसे शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण–विधि, अनुशासन आदि विषय में अध्ययन करना। 3. शिक्षा के विभिन्न आयामों का अध्ययन करना। 4. नई शिक्षा नीति 1986 के सन्दर्भ में उनके विचारों का अध्ययन करना। 5. पं॰ जवाहर लाल नेहरू के शैक्षिक विचारों का मूल्यांकन तथा वर्तमान भारतीय परिप्रेक्ष्य में उनके औचित्य का अध्ययन करना।
8. **सिंह, नवनीत कुमार (2009):** ने "भारतीय शिक्षा व्यवस्था में समाजवादी चिन्तकों का शिक्षा में योगदान और उसकी वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उपादेयता" नामक शीर्षक से अपना शोध प्रबंध प्रस्तुत किया। प्रबंध में उन्होंने पं॰ नेहरू, आचार्य नरेन्द्र देव, डॉ॰ सम्पूर्णानन्द तथा राम मनोहर लोहिया के शिक्षा दर्शनों का अध्ययन किया तथा अपने विचार व्यक्त किये।
9. **शर्मा, श्रीमती वीना (2009):** ने अपने शोधग्रंथ "पं॰ मदनमोहन मालवीय एवं महात्मा गाँधी का शिक्षा दर्शन : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन" में मालवीय जी तथा गाँधीजी के शिक्षा दर्शनों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया तथा शिक्षा के उद्देश्यों, महत्व और प्रकृति के बारे में विचार व्यक्त किये।
10. **दीप, आकाश (2012):** ने अपने शोध अध्ययन "जे॰ कृष्णमूर्ति एवं रजनीश के शैक्षिक विचारों का अध्ययन" में जे॰ कृष्णमूर्ति एवं रजनीश के शैक्षिक विचारों का अध्ययन किया तथा उनके विचारों का विश्लेषण कर उनकी प्रासंगिकता को जानने का प्रयास किया।
11. **कुमार, अरविन्द (2013):** ने अपने शोध ग्रन्थ "विवेकानन्द एवं अरविन्द घोष के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन" में स्वामी विवेकानन्द एवं अरविन्द घोष के शैक्षिक विचारों का अध्ययन एवं विश्लेषण किया तथा दोनों के शैक्षिक विचारों में समानताओं एवं असमानताओं को बताते हुए वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में विवेकानन्द एवं अरविन्द घोष के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता जानने का प्रयत्न किया।
12. **कुमार, दीपक (2014):** "अरविन्द घोष के विचारों का समालोचनात्मक अध्ययन" ने अपने अध्ययन में अरविन्द घोष के विचारों का विश्लेषण किया तथा वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उनके विचारों की प्रासंगिकता को जानने का प्रयास किया।

अध्ययन के उद्देश्य

- पंडित जवाहर लाल नेहरू के शैक्षिक दर्शन को ज्ञात करना।
- नेहरू जी के अनुसार शिक्षा के उद्देश्यों को निर्धारित करना।
- नेहरू के दर्शन में प्रतिपादित शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु शिक्षा पद्धतियों की समीक्षा करना।
- नेहरू द्वारा प्रतिपादित शिक्षक–शिक्षार्थी के सम्बन्धों की विवेचना करना।
- वर्तमान भारतीय परिपेक्ष्य में नेहरू के शिक्षा चिन्तन की उपादेयता का अध्ययन करना।

अध्ययन की अवधारणायें

- नेहरू का शिक्षा दर्शन भारतीय शिक्षा के पुनर्गठन का आधार हो सकता है।
- नेहरू जी के शैक्षिक विचार आधुनिक भारत के निर्माण में सहायक है और उन विचारों को शिक्षा के उद्देश्य एवं पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जा सकता है।
- वर्तमान भारतीय परिस्थितियाँ नेहरू के शैक्षिक विचारों से प्रभावित है।
- नेहरू विचारधारा की विषय सामग्री विभिन्न विधियों के सन्दर्भ में निर्धारित मापदण्ड के अनुरूप हैं।

अध्ययन में सम्मिलित व्यक्तित्व

पं॰ जवाहरलाल नेहरु

पंडित नेहरू जी एक महान चिन्तक, राजनीतिज्ञ तथा नवचेतना के मूर्तिमान युगपुरुष थे। पंडित नेहरू जी भारतीय इतिहास की उन गिनी चुनी महान विभूतियों में से हैं जो राष्ट्र को एक नवीन दिशा की ओर ले जाते हैं। पंडित नेहरू जी ऐसे चिन्तक थे जिन्होंने ऐसे आधारभूत सिद्धान्त प्रस्तुत किये जिनमें मानव जाति के परम लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके। उन्होंने मानव जीवन के अनेकों आदर्शों एवं पहलुओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षा के विभिन्न उद्देश्य बताये। पंडित नेहरू जी ने शिक्षा पद्धति के माध्यम से आत्म–सम्मान एवं स्वाबलम्बन का पाठ पढ़ाया।

समस्या का सीमांकन

आधुनिक युग में पंडित नेहरू का स्थान समकालीन दार्शनिकों के शीर्ष पर है। उनकी बहुमुखी प्रतिभा, अन्तः चेतना एवं समन्वयात्मक दृष्टिकोण ने ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में अपना स्थान बनाया है।

नेहरू धर्म, दर्शन, नैतिकता, शिक्षा और संस्कृति आदि विषयों में पारंगत थे। जीवन की सर्वांगीण व्याख्या उनके शैक्षिक विचारों में निहित है, उन्होने अपने सिद्धान्तों को अपने जीवन में उतारा है। शिक्षा शस्त्री होने के साथ–साथ वे एक कर्मवीर पुरूष थे। इस प्रकार पंडित नेहरू का व्यक्तित्व सागर के समान गम्भीर तथा हिमालय के समान ऊँचा है। उनमें विभिन्न प्रकार के रत्न, बहुमूल्य पदार्थ एवं सारभूत वस्तु के रूप में चिन्तन–मनन तथा विचार की उपलब्धि होती है। जीवन का प्रत्येक पक्ष अपनी व्याख्या उनके सिद्धान्तों में करता प्रतीत होता है, किन्तु शोध प्रबन्ध में उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व को उनके शैक्षिक विचारों तक ही सीमित रखा गया है वे अपने युग के महान् शिक्षा शास्त्री रहे हैं। उनके महान व्यक्तित्व के इसी पक्ष को प्रस्तुत करने का मुख्य लक्ष्य प्रस्तुत अध्ययन का है। साथ ही वर्तमान समय में उनके शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता को भी अध्ययन का मुख्य लक्ष्य रखा गया है।

शोध विधि एवं प्रक्रिया

वर्तमान अध्ययन मूल रूप से नेहरू के ग्रन्थों के आधार पर उनके शिक्षा दर्शन को सुव्यवस्थित करने और उनके दर्शन के आधार पर शिक्षा के स्वरूप, उद्देश्य तथा मूल्य और शिक्षण पद्धतियों आदि की मीमांसा प्रस्तुत करने हेतु नियोजित किया गया है। उपर्युक्त उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु उक्त विधि का चयन किया गया है।

समस्या कथन
"पंडित जवाहरलाल नेहरू के शैक्षिक विचारों का अध्ययन एवं वर्तमान समय में प्रासंगिकता।"

शोध विधि का चयन
ऐतिहासिक अनुसंधान का सबसे बडा गुण वर्तमान पर प्रकाश डालने की क्षमता है। वर्तमान शिक्षा पद्धति को प्रकाशित करने के लिए प्रस्तुत शोध में ऐतिहासिक विधि को अपनाया गया है। इसके अन्तर्गत पंडित नेहरू की शिक्षा सम्बन्धी विचारधारा का वैज्ञानिक अध्ययन किया गया है। ऐतिहासिक अनुसंधान विधि का नेतृत्व शिक्षा के क्षेत्र में इसलिए है कि इसके द्वारा ही आज प्रचलित शैक्षिक परिपाटियों का उद्‌गम कैसे हुआ? किसी उच्च कोटि की शैक्षिक संस्था ने विकास कैसे किया? विगत में अपनायी गयी बहुत सी शैक्षिक नीतियों के क्या परिणाम रहे? ये महत्वपूर्ण प्रश्न है और उनका प्रतिउत्तर ऐतिहासिक अनुसंधान से ही मिल सकता है।
पंडित नेहरू के भाषण तथा रचनाओं के आधार पर उनके शिक्षा दर्शन को सुव्यवस्थित करने और उनके दर्शन के प्रयोगात्मक आधार पर शिक्षा का स्वरूप, उद्देश्य तथा शिक्षण पद्धतियों आदि की मीमांसा प्रस्तुत करने के लिए नियोजित किया गया है। पंडित नेहरू का शिक्षा दर्शन अतीत में उनके द्वारा रचित रचनाओं तथा उनके शिक्षा दर्शन पर आधारित अन्य लेखकों के ग्रन्थों, पत्र पत्रिकाओं में दृष्टिगोचर होता है। ये सभी ग्रन्थ ऐतिहासिक स्रोत से सम्बन्धित है। इन्हीं के आधार पर पंडित नेहरू का शिक्षा दर्शन उभर कर सामने लाने में सहायता प्राप्त होगी।

जनसंख्या एवं न्यादर्श
प्रस्तुत अध्ययन में पंडित जवाहर लाल नेहरू द्वारा रचित विभिन्न पुस्तकों, लेखों, पत्रों तथा पंडित जवाहर लाल नेहरू के बारे में विभिन्न विद्वानों एवं लेखकों द्वारा रचित पुस्तकों, लेखों तथा अन्य अध्ययन सामग्री का अध्ययन किया गया है।
चूंकि समय तथा शक्ति को दृष्टिगत रखते हुए पंडित जवाहर लाल नेहरू पर संपूर्ण विषय सामग्री को सम्मिलित करना संभव नहीं है। इसलिए प्रस्तुत शोध में पंडित जवाहर लाल नेहरू के शैक्षिक दर्शन एवं विचारों पर आधारित चुनिंदा, पुस्तकों, पत्रों, भाषणों एवं लेखों का प्रयोग अध्ययन एवं विश्लेषण के लिए किया गया है।

तथ्यों का संकलन
इसमें निम्न साधन व स्रोतों को प्रयोग में लाया गया है–
(क) प्राथमिक स्रोत– इसके लिए पंडित जवाहर लाल नेहरू कृत साहित्य का अध्ययन करना।
(ख) द्वितीय स्रोत– पंडित जवाहर लाल नेहरू के जीवन दर्शन पर अन्य लेखकों द्वारा लिखे साहित्य का अध्ययन करना।

तथ्यों के विश्लेषण के आधार पर निष्कर्ष
पंडित नेहरू देश में विज्ञान और प्रोद्योगिकी को बढ़ावा देने के पक्ष में थे। उन्होने अपने देश वासियों के लिए सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास के लिए उसके प्रयोग पर बल दिया। अतः उन्होंने तकनीकी एवं वैज्ञानिक अनुसंधान संस्थाओं की स्थापना की। 14 मई, 1958 को राष्ट्रीय विज्ञान नीति के प्रस्ताव को स्वीकार किया, जिसमें समुचित उपायों से वैज्ञानिक अनुसन्धान के सभी शैक्षिक तत्वों को बढ़ावा देना था।
पंडित नेहरू धर्म और विज्ञान में कोई अन्तर नही मानते थे। उन्हें अन्धविश्वास तथा चमत्कार में विश्वास नहीं था वे तर्क युक्त ज्ञान के पक्ष में थे।

नेहरू के शिक्षा के सिद्धान्त सम्बन्धी निष्कर्ष
पंडित नेहरू ने अपनी शिक्षा के स्वरूप में निम्नलिखित आधारभूत सिद्धान्तों पर बल दिया–
1. प्राथमिक स्तर पर शिक्षा अनिवार्य तथा निःशुल्क।
2. शिक्षा का उद्देश्य चरित्र निर्माण, जीवन निर्माण।
3. शिक्षा का माध्यम मातृ भाषा तथा विभाषा के अध्ययन पर जोर (हिन्दी, अंग्रेजी, एवं अपनी मातृ भाषा या क्षेत्रीय भाषा)
4. आत्म निर्भरता पूर्ण शिक्षा।
5. सभी के लिए शिक्षा के समान अवसर।
6. रूचि एवं बौद्धिक भिन्नता के आधार पर शिक्षा।
7. शिक्षामें उत्पादकता पर जोर।

शिक्षा का अर्थ सम्बन्धी निष्कर्ष
नेहरू के अनुसार शिक्षा का अर्थ बालक के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास तथा उसे समाज हित के लिए तैयार करना है।

उद्देश्य सम्बन्धी निष्कर्ष
नेहरू शिक्षा को उत्पादकता से सम्बन्धित करना तथा बच्चों में राष्ट्रीय एकता एवं अन्तर्राष्ट्रीय समझदारी की भावना का विकास करना चाहते थे। उन्होंने बालक में प्रजातान्त्रिक एवं समाजवादी दृष्टिकोण विकसित करने पर बल दिया।

पाठ्यक्रम सम्बन्धी निष्कर्ष
पंडित नेहरू ने बालकों के लिए ऐसे पाठ्यक्रम की रूप रेखा पर बल दिया जिसमें वे क्रियात्मक एवं रचनात्मक रूप से जुड़ सके। उन्होंने पाठ्यक्रम में खेल की भावना को राष्ट्रीय स्तर पर पहुँचाने की मुहिम छेड़ी। शारीरिक प्रशिक्षण केन्द्रों की स्थापना उन्हीं का एक अंग था। वे एक संतुलित पाठ्यक्रम के पक्षपाती थे, जिससे कि बच्चों का चारों दिशाओं में विकास हो सके।

शिक्षण विधि सम्बन्धी निष्कर्ष
पंडित नेहरू ने शिक्षण विधियों को अप्रत्यक्ष रूप से व्याख्या की, जिसके अन्तर्गत "पिता के पत्र पुत्री के नाम" के माध्यम से पत्राचार शिक्षण विधि पर स्पष्ट बल दिया। उन्होंने सकारात्मक शिक्षण पद्धति के अन्तर्गत भाषण पद्धति, प्रर्दशन पद्धति, ऐतिहासिक पद्धति और जीवन गाथा पद्धति आदि के बारे में संकेत दिया तथा सकारात्मक बाल पद्धति के अन्तर्गत उन्होंने खोज विधि, प्रयोगात्मक पद्धति एवं समस्यात्मक पद्धति आदि की प्रेरणा दी। वे कहानी, प्रश्नोत्तर, देशाटन तथा आधुनिक संचार माध्यमों को शिक्षण में प्रयोग करने के पक्षपाती थे।

गुरू–शिष्य सम्बन्धी निष्कर्ष
नेहरू के अनुसार शिक्षक को अपने शिष्यों की अदम्य शारीरिक आवश्यकताओं को पहचानने में समर्थ होना चाहिए तथा शिष्यों को भी अपने गुरू के प्रति पूर्णतः प्रतिबद्ध होना चाहिए। शिक्षा जगत में वे अध्यापक को मित्र तथा पथ प्रदर्शक के रूप में देखते थे।

विद्यालय व्यवस्था सम्बन्धी निष्कर्ष
पंडित नेहरू भारतीय विद्यालयों में पाश्चात्य प्रशासन व्यवस्था का रूप चाहते थे वे शिक्षा पर राज्य प्रशासन का नियन्त्रण भी चाहते थे। वे समाज के धनिक वर्गो से शिक्षा के क्षेत्र में सहयोग चाहते थे। वे विद्यालयों के स्वायत्ता के पक्षपाती थे। विद्यालय का कार्य ज्ञान देना तो है ही किन्तु उसे अपने छात्रो की गुणवत्ता का भी आकलन करना चाहिए।

शैक्षिक अभिकरणों की भूमिका सम्बन्धी निष्कर्ष

नेहरू ने दो प्रकार के शैक्षिक अभिकरण माने हैं–एक औपचारिक शिक्षा तथा दूसरी अनौपचारिक शिक्षा। औपचारिक शिक्षा में वे प्रमुख स्थान विद्यालयों को देते हैं तथा अनौपचारिक शिक्षा में उनका विचार है कि परिवार से बढकर कोई शिक्षा केन्द्र नहीं।

नेहरू जी की शिक्षा के सबल पक्ष

पंडित नेहरू की शिक्षा के निम्नलिखित सबल पक्ष हैं–

1. वह भारत के विकास के लिए तकनीकी औद्योगिक एवं वैज्ञानिक विषयों की शिक्षा आवश्यक मानते हैं।
2. वह नारी की शिक्षा एवं जन शिक्षा पर बल देते हैं।
3. उनकी शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य का दृष्टिकोण उदार बनाना है और मनुष्य में मानवीय दृष्टिकोण विकसित करना है।
4. वह अन्धविश्वास एवं रूढ़िवादिता के विरोधी हैं।
5. वह प्राईमरी शिक्षा निःशुल्क एवं अनिवार्य चाहते है।
6. नेहरू त्रिभाषा शिक्षण के पक्षपाती थे।

नेहरू की शिक्षा के निर्बल पक्ष

पंडित नेहरू का शिक्षा दर्शन निम्नलिखित रूप में निर्बल प्रतीत होता है–

1. पंडित नेहरू एक व्यवसायिक शिक्षा शास्त्री नहीं थे। उन्होंने न तो शिक्षा के विभिन्न तत्वों एवं अंगों के संबंध में अलग से कोई व्याख्या प्रस्तुत की है और न ही कोई शिक्षा योजना दी है।
2. उन्होंने शिक्षा के उद्देश्यों पर ही अधिक प्रकाश डाला है। वह भी विशेष रूप से तकनीकी एवं वैज्ञानिक शिक्षा की प्राप्ति पर।
3. शिक्षा के बहुत से विषय है, जिनका अध्ययन बहुत आवश्यक है, उन पर भी कोई प्रभाव नहीं डाला।
4. शिक्षा के क्षेत्र में बहुत सी समस्यायें हैं, उनके समाधान के लिए कोई सुझाव प्रस्तुत नहीं किए।

भारतीय शिक्षा में सुधार के सुझाव

भारतीय शिक्षा में सुधार के कुछ बिन्दुओं पर विचार किया जा सकता है, ये विचार बिन्दु निम्नवत हैं–

1. शिक्षा के उद्देश्य निर्धारण करना
2. भारतीय जीवन मूल्य के आधार पर पाठ्यक्रम
3. शिक्षण की विधियाँ निर्धारित करना
4. शिक्षक–शिक्षार्थी के मध्य सम्बन्ध
5. शिक्षा में परिवार, राज्य, का कर्तव्य निर्धारित करना
6. शिक्षा में महिलाओं का स्थान निर्धारण
7. शिक्षा का प्रचार प्रसार करना

सन्दर्भ सूची

1. नेहरू : (1986) विश्व इतिहास की झलक, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. नेहरू : (1988) हिन्दूस्तान की कहानी, प्रकाशक यशपाल जैन, मन्त्री, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. जैन पुखरा : (1904) भारतीय राजनीतिक विचारक, साहित्य भवन, आगरा।
4. नेहरू : जवाहर लाल नेहरू बाङ्मय खण्ड 1 से 11 तक
5. नेहरू : राजनीतिक जीवन चरित्र, लेखक माइकल ब्रीचर, अनुवादक डॉ0 हरिवंश राय बच्चन।
6. नेहरू : मेरी कहानी, अलाइड पब्लिशर्स प्राईवेट लिमिटेड, बम्बई।
7. (1936) 'इण्डिया एण्ड दी वर्ल्ड' गर्ग एलन एण्ड अनविन एल0 टी0 डी0, लंदन।
8. (1938) 'एट्टीन मन्थस एन इण्डिया' एशिया पब्लिशिंग हाऊस, बम्बई।
9. (1958) 'ए बंच आफ ओल्ड लेटर्स' एशिया पब्लिशिंग हाऊस, बम्बई।
10. (1949) 'इन्डिपेन्डेंस एण्ड आफ्टर' ऐ कलेक्शन आफ स्पीचिज 1946–49 प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली।
11. (1959) 'इण्डिया टूडे एण्ड टुमारो' आजाद मैमोरियल लेक्चर्स, इण्डियन कॉसिल ऑफ क्लचरल रिलेशन्स, नई दिल्ली।
12. नेहरू जवाहर लाल (1962) 'एन आटोबायोग्राफी' विद यूसिंग्स ऑल इण्डिया, नई दिल्ली अलाइड पब्लिशर्स, दिल्ली।
13. (1964) 'लेटर्स फरोम ए फादर टू हिज फादर', आक्सफार्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, लन्दन।
14. (1973) 'लेटर्स फरोम ए फादर' टू हिज डॉटर, एशिया पब्लिशिंग हाऊस, कलकत्ता।
15. (1965) जवाहर लाल नेहरू ऑन कम्पयूनिटी डवल्पमेंट, पंचायती राज एवं सहकारिता, पब्लिकेशन्स डिवीजन, मिनिस्ट्री ऑफ इनफोरमेशन एण्ड ब्रोडेकास्टिग भारत सरकार, मार्च 1965
16. (1960) जवाहर लाल नेहरू ऑन कम्पयुनिटी डवल्पमेंट, पब्लिकेशन डिवीजन, मिनिस्ट्री ऑफ इनफोरमेशन एण्ड ब्रोडेकास्टिग भारत सरकार, 1969
17. (1969) जवाहर लाल नेहरू स्पीचिज वाल्यूम चतुर्थ, सितम्बर 1957–अप्रैल 1963 पब्लिकेशन्स डिवीजन, मिनिस्ट्री ऑफ इनफोरमेशन एण्ड ब्रोडकास्टिंग, भारत सरकार, अक्टूबर 1969.
18. (1964) दी डिस्कवरी ऑफ इण्डिया, एशिया पब्लिशिंग हाऊस, बम्बई।
19. (1991) शर्मा जे0 एन0, नेहरू का राजनीतिक एवं सामाजिक जीवन, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ।
20. (1973) जवाहर लाल नेहरू मेमोरियल लेक्चरस, जवाहर लाल नेहरू मैमोरियल फण्ड नई दिल्ली, भारतीय विद्या भवन, बम्बई।
21. अकबर, एम0 के0 (1949) नेहरू, दी मेकिंग ऑफ इण्डिया, न्यूयार्क।
22. बालसुब्रहमण्यम, एम0 (1980) नेहरू इन सेकुलरइज्म, उप्पाल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली।
23. चौधरी, रामानारायण (1964) नेहरू इन हिस ऑवन वर्डस (हिज रिपलेस टू बेरियस क्यूश्चन) नवजीवन पब्लिशिंग हाऊस, अहमदाबाद।
24. दास, एम0 एन0 (1961) दी पॉलिटिकल फिलोसोफी ऑफ जवाहर लाल नेहरू, एलिन एण्ड अनविन।
25. दत्त, आर0 एस0 (1981) सोसलिज्म ऑफ जवाहर लाल नेहरू, अभिनव पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
26. गोपाल, सर्वपल्ली राधाकृष्णन (1976) जवाहर लाल नेहरू एक बायोग्राफी, बाल्यूम थर्ड, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस,बम्बई।
27. गांधी, एम0 ए0 (1937) कलेक्टिड वर्क ऑफ महात्मा गांधी पब्लिकेशन डिवीजन, नई दिल्ली।
28. शाह, ए0 वी0 (1965) जवाहर लाल नेहरू, ए क्रिटिकल ट्राइवुट मानक तलास, बम्बई।
29. रॉय, एम0 सी0 अलापाथी (1978) गांधी एण्ड नेहरू, फ्रेंक ब्रोदर्स एण्ड कम्पनी प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली।